Page-1

पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शनों में अन्तर
(Distinguish between Western & Indian Phil.)

(1) पाश्चात्य और भारतीय दर्शनों की उत्पत्ति में अंतर है — Western Philosophy की उत्पत्ति जिज्ञासा (Curiosity) से होती है, किन्तु भारतीय दर्शन की उत्पत्ति दुःखों को दूर करने इच्छा से है।

Western Philosopher जिज्ञासा-वश, आत्मा (Soul), ईश्वर (God), Cosmic World जैसे चीजों का विवेचना करते हैं।

इसके विपरीत Indian Philosophy विश्वव्यापी कष्टों और बुराईयों (Sorrow & Evils) को देखकर एक प्रकार, मानसिक असंतोष अनुभव करते हैं और दूर करने के लिए दार्शनिक चिंतन प्रारंभ करते हैं।

(2) Western Philosophy सैद्धांतिक (Theoretical) है, परन्तु Indian Philosophy (Practical) —

Western में दर्शन मानसिक व्यायाम (mental exercise) समझा जाता है, वहां दर्शन का अध्ययन ज्ञानप्राप्ति के लिए किया जाता है। Indian Phil. का लक्ष्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि मानव को बंधन (Bondage) से छुटकारा करके 'मोक्ष' दिलाना है।

यहां दर्शन जीवन की समस्याओं के समाधान में लगा रहता है।

Prof. Max Muller के शब्दों में —

"भारत में दर्शन का अध्ययन केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं, वरन् जीवन के चरम की प्राप्ति के लिए किया जाता है।"

(3) Western Phil. का दृष्टिकोण वैज्ञानिक (Scientific) है, किन्तु Indian Phil. का धार्मिक (Religious) —

Western thinker परम तत्त्व (Ultimate Reality)

का ज्ञान प्राप्त करने के लिए Scientific methods अपनाते हैं। Western परंपरा में आलोच्य विषय को अपने सुविधानुसार परिवर्तित कर दिया जाता है। ऐसा करना वैज्ञानिक प्रयोग के द्वारा संभव है, इसलिए, Western Philosophy को विज्ञानमूलक कहा जाता है।

दूसरी Indian Phil. धर्ममूलक है, Indian परंपरा में व्यक्ति योग, जप, तप तथा साधना का सहारा लेकर स्वयं को इस प्रकार का लेता है, ताकि वह परम-तत्त्व का साक्षात्कार करने में सफल हो सके।

इन साधनों से उसे दिव्य-दृष्टि मिलती है, जिससे वह परम सत् तक पहुँच पाता है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है।

Western परंपरा में दर्शन और धर्म दोनों विरोधी माने जाते हैं, परन्तु भारतीय परंपरा में इन दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध है।

यही कारण है कि दोनों में दृष्टिकोण को लेकर अंतर है।

(4) Western Phil. में बौद्धिक ज्ञान (Intellectual or Rational Knowledge) की प्रधानता है, किन्तु भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक ज्ञान (Intuitive Knowledge) की ——

प्रायः सभी Western thinker बुद्धि (Reason or Intellect) को परम तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ मानते हैं उनमें ——

— Socrates
Plato
Aristotle
Decartes
Spinoza
Leibnitz
Hegel

ये बुद्धिवादी विचारक बुद्धि को ही ज्ञानप्राप्ति का साधन मानते हैं,

इसके विपरीत Indian Phil. परम तत्त्व तक पहुँचने में बुद्धि को असमर्थ पाते हैं, क्योंकि इसकी शक्ति सीमित है और इससे आंशिक ज्ञान ही मिल सकता है।

बौद्धिक स्तर पर ज्ञाता और ज्ञेय (Knower & Known) के बीच अंतर बना रहता है, किन्तु आध्यात्मिक स्तर पर यह भेद नहीं रहता।

बौद्धिक ज्ञान संदेहात्मक एवं अपूर्ण है, किन्तु आध्यात्मिक स्तर पर यह भेद नहीं रहता। ज्ञान संदेहरहित, निश्चित एवं पूर्ण माना जाता है।

कुछ आधुनिक विचारक भी बुद्धि की अपेक्षा आध्यात्मिक अनुभूति को प्रमुख समझने लगे, इसमें दो नाम उल्लेखनीय हैं: — Bradley
Bergson आदि।

(5) Western Phil. विश्लेषणात्मक (Analytical) है, किन्तु Indian Phil संश्लेषणात्मक (Synthetical) —

बुद्धि किसी विषय को खंडों में बाँटकर उसका अध्ययन करती है। यही विश्लेषणात्मक पद्धति है। Western thinker दर्शन को — तत्त्वविज्ञान (Metaphysics)
नीतिविज्ञान (Ethics)
प्रमाण विज्ञान (Epistemology)
ईश्वरविज्ञान (Theology)
सौन्दर्यविज्ञान (Aesthetics)
और ~~तर्कविज्ञान~~ तर्कविज्ञान (Logic)
आदि
विभिन्न शाखाओं में विभाजन करके अध्ययन करते हैं।

इसके विपरीत Indian Phil. इन सारे विषयों को ले तत्त्वविज्ञान, नीतिविज्ञान, ईश्वर विज्ञान का एक साथ अध्ययन करते हैं। यह भारतीय दर्शन का समन्वयवादी दृष्टिकोण है।

(6) Western Phil. में इहलोक (This World) और वर्तमान काल (Present Time) पर विशेष जोर दिया जाता है, इनमें से भी कुछ छोड़ दिया जाय तो जैसे :- Socrates, Plato, आदि, देखते हैं प्रायः Western चिंतक इसी दुनिया और वर्तमान के काल तक ही अपना अध्ययन सीमित रखते हैं।

दूसरी और Indian Phil. दार्शनिक इस लोक के अतिरिक्त स्वर्ग, नरक आदि का भी अध्ययन करते हैं। साथ-साथ ही वर्तमान, भविष्य और भूत का भी अध्ययन करते हैं।

(7) आशावादी (Optimistic) और निराशावादी (Pessimistic) दृष्टिकोण ———

निराशावादी और आशावादी एक प्रकार मन की ऐसी प्रवृत्ति, जो जीवन को विषादमय और या तो आनंदमय समझती है।

Indian Phil. में दुःखों का वर्णन देखकर कुछ लोग इसे निराशावादी दर्शन कहते हैं, परन्तु ऐसा सोचना अपूर्ण ज्ञान का परिचायक है। Indian Phil. की शुरुआत निराशावाद जरूर है परन्तु अंत आशावाद में होता है।

इसी प्रकार Western Phil. में भी शोपेनहावर, हर्टमैन आदि निराशावादी विचारक हुए हैं।

अतः यह कहना उचित नहीं कि Western Phil. आशावादी है और Indian Phil. निराशावादी।

अतः इन सभी विरोधों के बावजूद भी Radhakrishnan और Moore आदि आधुनिक विचारक पूर्व और पश्चिम का भेद मिटाकर एक World Philosophy की स्थापना में लगे रहे, ये अन्तर बाहर है। अंतर्निहित कोई विरोध नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं।

Continue---